भारद्वाज गोत्रस्य वृत्तांतम्

श्रीमन्महानुभाव भारद्वाज मुनि के शिष्य तपोधन ब्रह्मचारी ने गुरु आज्ञा से चित्रकूटाधीश महिपाल अग्निवंशी की सौभाग्यवती नामी कन्यका से विवाह कर अंगेठा ग्राम में बास किया पश्चात् वेदवित् ब्राह्मणों द्वारा अग्निहोत्र कर समस्त विप्रों को दान मान पूर्वक प्रसन्न किया तब तो ब्राह्मणों ने तपोधन को अग्निहोत्र पदवी दे भारद्वाज गोत्र नियत किया उन्हीं तपोधन अग्निहोत्री की सप्तम पीढ़ी में धीरधर नामक परम तेजस्वी भये वह धीरधर अंगेठा के अग्निहोत्री कहलाये धीरधर के ५ पुत्र १ बालमुकुन्द ऐंधीपुर के तिवारी कहाये २ देवकीनन्दन तिवारीपुर के तिवारी ३ अघमोचन चौंसा के दुबे ४ मदमोचन मिहौनी के दुबे ५ बिहारी ख्यूलहा के दुबे कहाये, बिहारी के पुत्र, मनऊँ रैगाँव के दुबे मदमोचन दुबे के २ पुत्र, १ अम्बिकादत्त बरुआ के दुबे २ दुलारे इत्तावर के दुबे अघमोचन दुबे के पुत्र १ त्रिलोकी इत्तावर के उपाध्याय कहाये,

बालमुकुन्द के ३ पुत्र १ हीरा राधनि के शुक्ल, २ किशुन गाडूमऊ के दीक्षित, ३ शंकर पहितिया के पांड़े शंकर के तीन पुत्र १ गङ्गाधर भुसौरा के पांड़े, २ शशिधर सोनहा के पांड़े, ३ शूलधर अमोरा के पांड़े ई सब पहितिया प्रसिद्ध भये देवकीनन्दन तिवारी के पुत्र दुर्गादत्त खौरिहा के तिवारी भये, हीरा शुक्ल के पुत्र शुभंकर राधनि के शुक्ल पिनाकी शांतिपुर के शुक्ल तिनके १ पुत्र भूरे कालिकापुर के शुक्ल कहाये किशुन दीक्षित के ६ पुत्र १ पुत्र बृजलाल मगरायल के दीक्षित, २ बुलाकी ख्यूटहा के दीक्षित, ३ बनवारी जहानाबाद के दीक्षित, केदार डौंड़ियाखेरे के दीक्षित, ५ महानन्द कल्हारी के दीक्षित, ६ निहाल हड़हा के दीक्षित, अर्थात् सब गाडूमऊ के दीक्षित विख्यात भये।

भारद्वाज शुक्ल तिवारी पांडेय अग्निहोत्री दीक्षित अवस्थी दुबे उपाध्याय

स्थान	असामी	विस्वा
राधनि के	शुक्ल हीरा	५
,,	शुभङ्कर	४
किम्पुरा	श्रीपति	३
शांतिपुर के	पिनाकी	३
कालिकापुर के	भूरे	३
तिवारीऐंधीपुरके	बालमुकुन्द	४
तिवारीपुर के	देवकीनन्दन	५
खौरिहा के	दुर्गादत्त	४
तिवारी बेनउर के	रामसहाय	
पुरवा के	शिवसहाय	२
ऐंनि के	शिवलाल	,,
पांड़े पहितिया के	शंकर	४
मुसौरा पहितिया	गंगाधर	३
सोनहा ,,	शशिधर	,,
पांड़े अमौरा	शूलधर	,,
अग्निहोत्री अँगठाके	तपोधन	४
,, ,,	धीरधर	,,
,, ,,	जनार्दन	,,
दीक्षित गाड़मऊ के	किसन	६
मगरायल के	ब्रजलाल	५
ख्यूटहागाड़मऊ के	बुलाकी	५
जहानाबाद के	बनवारी	५
डौड़ियाखेरे के	केदार	७
कन्हारी के	महानन्द	३
हड़हा के	निहाल	,,
दीक्षित गङ्गा		२
,,	भवदत्त	१०
अवस्थी इत्तावरी	कौशकी	३
दुबे चौंसा के	अघमोचन	,,
मिहौनी के	मदगोचन	,,
ख्यूलहा के	विहारी	२
दुबे रैगांव के	मनऊँ	,,
बरुआ के	अम्बिकादत्त	४
इत्तावर के	दुलारे	२
दुबे भदेश्वर के	पूरन	,,
दुबे उनइयाँ के	पुरुषोत्तम	,,
भानु के	पाराशरी	,,
उपाध्यायइत्तावरके	त्रिलोकी	,,
,,	मलिहाबाद पंडित	,,
नागपुरजहानाबादीसौतिहा		१

स्थान	असामी	विस्वा
मिश्र महँगू पटोरे के		१०
अध्वर्यु नरोत्तम पुरैनिया		२
" सगुनपुर के अर्गलस		"
पाठक जहानाबाद यज्ञ		३
" मगरायल जागेश्वरी		३
" चौंसा के भानु		५

स्थान	असामी	विस्वा
पाठक गलाथे के		२
" सैनिहा के		"
" नागपुर के		"
" देवकली के		"
" नरवल के		"

इति भारद्वाज गोत्रम्।

❀ इति ❀

वत्स गोत्रस्य वृत्तांतम्

श्री ब्रह्माजी के कुल में वत्सजी परम प्रतापी भये तिनके कुल में माधवानन्द अति विद्वान् भये उन्होंने देशाटन कर अनेक राजाओं को शिष्य किया पुनः देवकली ग्राम में रहने लगे सो वत्सगोत्री देवकली के तिवारी कहाये उन्हों माधवानन्द के २ पुत्र भये पहिले पुत्र मदनगोपाल साँपे के तिवारी कहाये, दूसरे पुत्र गोवर्धन अर्गलपुर के तिवारी कहाये मदनगोपाल के ४ पुत्र १ कसनी मंधना के तिवारी २ रोहन रौतापुर के तिवारी ३ भुन्नी रायपुर के तिवारी ४ गयादत्त मकनपुर के तिवारी कहाये,